भारतीय फिल्म संगीत का स्वर्णिम युग

नवीन कुमार
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

Abstract

Indian film music is one of the popular music in the world. 1950 to 1970 was the time when Indian film music had saw many great musicians and artists. Due to great music, the films of that period got a great success. Film music is generally based on classical music and has a soothing effect on the audience. This period is called Golden period of the Indian film music.

Key words: Indian Film Music, Indian films.

भारतीय संगीत के विभिन्न रुपों में बहुत ही प्रचलित और लोकप्रिय विधा है – चित्रपट संगीत। चित्रपट संगीत आज जन–जन मे व्याप्त है। संगीत के चलचित्र प्रारुप ने अपने शैशव काल से ही जन साधारण को बहुत प्रभावित किया और वर्तमान में संगीत की जो जगह आम जनमानस में है उसका सबसे बड़ा कारण फिल्म संगीत का प्रचार में होना ही है। अल्प समय में ही विभिन्न कारणों से जनसाधारण में इसकी लोकप्रियता सर्वोपरि हो गई है। भारतीय फिल्म संगीत लगभग गत अस्सी वर्शों से आम जनता के दिलों दिमाग पर छाया हुआ है और अपनी इस अस्सी वर्षों की यात्रा में यह आसमान को छूता हुआ प्रतीत होता है। देश की आम जनता को संगीत से जोड़ने, सुरों से परिचित कराने एवं उन्हें गुनगुनाने की प्रेरणा संगीत के विद्वानों अथवा उस्तादों से नहीं मिली अपितु इसका श्रेय फिल्म संगीत, संगीत निर्देशकों, गीतकारों को ही जाता है जिनके कारण वो वर्शों पुरानी धुनें आज भी जिन्दा हैं और हमारी अमूल्य धरोहर हैं। फिल्म संगीत समाज का भी दर्पण है। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था सही रुप में समाज के उत्थान–पतन के साथ फिल्म संगीत में परिलक्षित होती है। यदि समाज पतन के उत्थान की ओर जा रहा है तो फिल्म संगीत भी उसी ओर अग्रसर होता है।

फिल्म संगीत ने संगीत के सभी पहलुओं को छुआ ही नहीं बल्कि उन्हें समेटा भी हुआ है। यथा–शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, गज़ल, भजन, गीत, कव्वाली आदि सभी का स्वरुप–दर्शन यहां होता है। रागों की जटिलता को फिल्म संगीत ने अत्यन्त आसान बना दिया है। स्वर–लय से सुसज्जित हो सकल जगत को अपने में समाहित कर लिया हैं। शब्द और स्वर का ऐसा अलौकिक समन्वय कि मानो गीत हिंडोले ले रहे हों और शिथिल भावों को स्फूर्ति प्रदान कर रहे हों। ऐसी संजीवनी जिससे क्षणभर में सम्पूर्ण प्राणी जगत को प्राणदान मिल जाए। शास्त्रीय रागाधारित गीतों में स्वरों का ऐसा समन्वय है कि विद्वान शास्त्रीय संगीतज्ञ उस अलौकिक आकार को नकार नहीं सकते। न व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध और न

रस–सौंदर्य से परे। विभिन्न अनुभूतिओं को स्थापित करने के लिए अनुकूल रागों का प्रयोग चलचित्र में हुआ है। वहां संगीत को शास्त्र से बांधकर नहीं रखा गया है, वहां रंजकता प्रधान है। लोक रुचि को ही आधार मानकर लोक–शैली का भी अद्भुत प्रयोग किया गया है।

1950 में फिल्म संगीत के एक ऐसे दौर का आरम्भ हुआ जिसे आज हिन्दी सिनेमा का स्वर्णिम युग कहा जाता है। 1950 से लेकर 1970 तक के इस काल में फिल्म संगीत ने एसे अद्वितीय कलाकारों को दुनिया के सामने लाकर खड़ा कर दिया जो आज महान् कलाकारों की श्रेणी में सबसे आगे हैं। यह फिल्म संगीत का ऐसा दौर था जिसमें यह अपने उच्च शिखर पर विराजमान था। आज की उन्नत तकनीक वाली तेज भागती–दौड़ती हिन्दुस्तानी फिल्में और कानफाड़ू धूम–धड़ाकें वाले संगीत से बिल्कुल अलग इस दौर का संगीत अत्यन्त मधुर, सुरीला, कानों में अद्भुत मीठास घोलने वाला और किसी अच्छे, पुराने शराब की तरह नशा देने वाला था। जो आज भी सुनने वालों को दीवाना बना देता है।

छठे दशक में फिल्म संगीत

इस दशक की शुरुआत में फिल्म संगीत परचम लहराने को बेताब था। सिनेमा संगीत का स्वर्णकाल आने वाला था, तभी तो इससे जुड़ी महान हस्तिओं का आगमन हो चुका था। 1950 में राजकपूर की ‘बरसात’ अविस्मरणीय फिल्म थी जिसमें पहली बार संगीत निर्देशक की नई जोड़ी ‘शंकर–जयकिशन’ सामने आई थी। इस फिल्म में गीत ‘‘जिया बेकरार है’’, ‘‘हवा में उड़ता जाये’’, ‘‘छोड़ गये बालम’’ जैसे गीत इतने लोकप्रिय हुये कि अभी तक सुने जाते हैं। 1950 से ही फिल्म संगीत ऐसे दौर से गुजरा, जिसे आज स्वर्गयुग के नाम से जाना जाता है। 1950 में कुछ नये संगीतकारों का भी प्रवेष हुआ जिनमें देवेन्द्र गोयल की फिल्म ‘आंखे’ में पहली बार मदन मोहन ने संगीत दिया। इस फिल्म का गीत ‘‘मेरी अटरिया पे कागा बोले, मेरा जिया डोले को आ रहा है’’, मीना कपूर द्वारा गाया गया यह गीत बहुत प्रसिद्ध हुआ। 1950 में ही फिल्म ‘आंखें’ क गीत ‘‘मेरी अटरिया पे कागा बोले’’ से संगीतकार मदन मोहन को पहचान मिली। वैसे फिल्म जगत में मदन मोहन ने स्वतन्त्रता के दो तीन वर्श बाद पदार्पण किया था लेकिन प्रारम्भ में उनकी संगीत को लेकर कोई विषेश पहचान नहीं बन पाई लेकिन जल्द ही उनकी प्रतिभा लोगों क सम्मुख आई और वे संगीत की दुनिया के बेताज बादशाह बन गये।

इसके बाद राजकपूर की एक और फिल्म ‘आवारा’ इस दशक की बेहतरीन फिल्म थी। इसका ‘‘आवारा हूं’’ गीत दुनिया भर में लोकप्रिय हुआ था। फिर 1952 की श्रेष्ठतम फिल्म ‘‘बैजू बावरा’’ दुनिया के सामने आई। संगोतकार नौशाद के संगीत से सजी इस फिल्म का हर गीत शास्त्रीय संगीत में ढला था। गीतकार शकील

बदायूंनी के गीत गली–गली में गुंज उठे। ''मन तड़पत हरि दरशन को आज'' नामक भक्ति गीत ख्याल शैली में राग मालकौंस में बांधा गया था और यह गीत उतना ही लोकप्रिय हुआ था जितना कि कोई भी मैलोडी प्रधान गीत हुआ करता था। आज भी इसके संगीत को लोग याद करते हैं। सी. रामचन्द्र के संगीत से सजी 'अनारकली' बेहद सफल फिल्म रही। आज भी इसका हर नग़मा सुरों का जादू बिखेरता है। गीत–संगीत प्रधान 'नागिन' 1954 की जबरदस्त हिट फिल्म रही। इसका गीत ''मन डोले, मेरा तन डोले'' सुनते ही लोग आज भी झूमने लगते हैं। गुरुदत की 'आर–पार' में ओ.पी. नैयर का संगीत सदाबहार रहा। इस फिल्म के गीत ''बाबू जी धारे चलना'', तथा ''ये लो मैं हारी पिया'' गीता दत्त ने गाये थे जिन्हे आज भी लोग याद करते व सुनते हैं। 1954 में ही विमल राय की 'दो बीघा जमीन' आई। इसमें कुल मिलाकर चार ही गीत थे व संगीतकार सलिल चौधरी के निर्देशन में रफ़ी, मन्नाडे तथा लता मंगेशकर ने गीत गाये थे। इस फिल्म को अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। ''झनक झनक पायल बाजे'' वर्श 1955 की कलात्मकता की दृष्टि से श्रेष्ठत्तम फिल्म थी। इसका नृत्य चित्रण व गीत संगीत आज भी लोकप्रिय है। इसके संगीतकार बसंत देसाई थे। 'मिस्टर एण्ड मिसेज 55' का संगीत भी लोकप्रिय रहा। इसका गीत ''ठण्डी हवा काली घटा आ ही गई झूम के'' आज भी लोगों को बहुत पसन्द है। 1956 में सलिल चौध्री के संगीत से सजी राजकपूर की फिल्म 'जागते रहो' आई। इसका गीत ''जागो मोहन प्यारे'' आज भी प्यार से सुना जाता है। इसी वर्ष ओ.पी. नैय्यर के संगीत निर्देशन में 'सी.आई.डी.' फिल्म आई। शमशाद बेगम और मुहम्मद रफ़ी की आवाज़ में ''ले के पहला पहला प्यार'' आज तक सुना जाता है।

इसी वर्ष यानी 1957 में 'प्यासा', 'मदर इण्डिया', 'दो आंखे बारह हाथ' व 'एक ही रास्ता' आई। गुरुदत्त की फिल्म 'प्यासा' एक अच्छी कलात्मक फिल्म बनकर आई थी। इसमें एस. डी. बर्मन ने संगीत दिया था। कथानक के साथ संगीत इस तरह गूंथा हुआ था कि दोनों को अलग नहीं किया जा सकता था। गीता दत्त की मादक सुरीली आवाज़ में गया हुआ गीत ''जाने क्या तूने कही'', रफ़ी और गीता दत्त का गाया '''हम आपकी आंखों में इस दिल को बसा लें तो' आज भी लोग सुनते हैं। शास्त्रीय रागों पर आधारित 'मदर इण्डिया' मे संगीत निर्देशन नौशाद ने किया था। ''नगरी नगरी द्वारे द्वारे'' गीत को लोग आज भी याद करते हैं।

'नया दौर' में ओ.पी. नैय्यर ने पंजाब की लोकधुनों को ऐसी सुन्दरता से प्रस्तुत किया कि लोग अब तक इसके गीत ''रेशमी सलवार कुरता जाली का'' भूले नहीं हैं। विमल राय की सबसे लोकप्रिय रही 'मधुमती' 1958 में बनी। इसमें सलिल चौधरी ने संगीत दिया था जो कि बहुत ही मधुर संगीत है। 1958 में ही आई

'हावड़ा ब्रिज' के गीत भी बहुत प्रसिद्ध हुए। 1959 में 'कागज़ के फूल' फिल्म के गीत भी काफी लोकप्रिय रहे। इसके संगीतकार एस.डी. बर्मन थे।''

ऋषिकेश मुखर्जी की अनाड़ी का गीत ''सब कुछ सीखा हमने, न सीखी होशियारी'' लोगों ने काफी गुनगुनाया। इस दशक के अन्त में जल्वागर हुई के. आसिफ की बहुप्रचारित और भव्य फिल्म 'मुगले आज़म'। शकील के गीतों को नौशाद ने बेहतरीन संगीत से पेश किया। इस फिल्म के सभी गीत आज भी लोगों के दिलों में घर किये हुए है। इसका एक गाना उस्ताद बड़े गुलाम अली खां ने गाया था। ऋषिकेश मुखर्जी की 'अनुराधा' में पं. रविशंकर ने अच्छी धुनें प्रस्तुत की। राजकुमार की 'जिस देश में गंगा बहती है' ने कुछ सुरीले गीतों के कारण लोगों का मन लुभाया। 'बरसात की रात' में साहिर के गीतों और रोशन के संगीत ने ऐसा समा बांधा कि लोग आज तक याद करते हैं। मुहम्मद रफ़ी की आवाज़ में ''जिन्दगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात'', ''मैने शायद तुम्हें पहले भी कहीं देखा है'' जैसे गीत तथा रफ़ी, लता, आशा, मन्नाडे और बातिश की आवाज़ में पेश कव्वाली ''ये ईश्क–ईश्क है ईश्क'' फिल्मी कव्वालियों में हर दृष्टि से बेजोड़ रहे। इनके अलावा विमल रॉय की 'परख', मनमोहन देसाई की 'छलिया' और एस. मुखर्जी की 'लव इन टोक्यो' फिल्म के गीत भी लोकप्रिय रहे।

सातवें दशक में फिल्म संगीत

सातवें दशक के प्रारंभिक वर्ष 1961 की एक हिट फिल्म सुबोध मुखर्जी की 'जंगली' थी। शंकर–जयकिशन की मनोरंजक धुनों से सजे इसके कई गीत काफी लोकप्रिय हुये। रफ़ी के गाए ''चाहे कोई मुझे जंगली कहे'' में पिरोआ शब्द ''याऽऽऽ हू' अर्से तक लोगों के कानों में गुंजता रहा। 'ससुराल' तथा 'आस का पंछी' के भी दो–तीन गीत काफी चले। 'गंगा जमुना' में पूर्वी भाषा के गीतों पर अभिनय करने में दिलीप कुमार ने कमाल किया तो उन्हें गाने में रफ़ी ने। ''नैन लड़ जई हैं तों मनवा मा कसक होइबे करी'', ''मेरे पैरों में घुंघरु बंधा दे'' आदि आज भी लोगों में उल्लास का संचार करते हैं और लता का गाया ''दो हंसों का जोड़ा बिछड़ गयो रे'' अब भी चाव से सुना जाता है। 'जब प्यार किसी से होता है' और 'हम दोनो' के दो–तीन गाने काफी लोर्काप्रिय हुए। 1962 की सबसे बढ़िया फिल्म गुरुदत्त की 'साहिब, बीवी और गुलाम' थी। संगीतकार हेमंत कुमार ने हर गीत की बढ़िया धुन बनाई थी। बिमल रॉय की 'बन्दिनी' 1963 में प्रदर्शित हुई। एस. डी. बर्मन ने इसे बेहतरीन धुनें बख्शी। ''मोरा गोरा अंग लै ले मोहे श्याम रंग दै दे'' गीत आज भी लोकप्रिय है। नौशाद के सदाबहार संगीत का प्रभाव था कि 'मेरे महबूब' सुपरहिट हुई। आज भी उसके गीतों व गज़लों में वही तासीर है। मदन मोहन के कर्णप्रिय संगीत के कारण 'हकीकत' ने काफी लोकप्रियता प्राप्त की।

1965 की प्रभावशाली फिल्म रही 'गाईड'। एस.डी. बर्मन के संगीत से सजी इस फिल्म के सभी गीत आज भी उतने ही लोकप्रिय हैं। ''तेरे मेरे सपने'', ''दिन ढल जाये'', ''कांटों से खींच के ये आंचल'', ''पिया तोसे नैना लागे'', ''गाता रहे मेरा दिल'' आदि गीत आज भी सुने जाते है। इसका गीत ''माई री म कासे कहूं पीर'' भावना प्रधान थी। 'तीसरी कसम' 1966 की यादगार फिल्म रही। उत्तर प्रदेश और बिहार के लोक संगीत पर आधारित मधुर धुनें शंकर–जयकिशन ने बनाई। प्रसाद प्रोडक्शन की फिल्म 'मिलन' में लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल के संगीत ने अच्छी सराहना पाई। इसका एक युगल गीत ''सावन का महीना पवन करे शोर'' आज भी जब सुनाई पड़ता है तो लोगों का मन हिलोरें लेने लगता है। 1968 की उल्लेखनीय फिल्म 'सरस्वती चन्द्र' साहित्यिक शैली के हिन्दी गीतों व कर्णप्रिय संगीत के कारण प्रशंसित रही। ''फूल तुम्हें भेजा है खत में'' व ''छोड़ द सारी दुनिया किसी के लिए'' आदि गीत आज भी लोकप्रिय हैं। इन फिल्मों के अतिरिक्त 'आदमी', 'आर्शीवाद', 'अनोखी रात', 'सपनों का सौदागर' आदि फिल्मों के कुछ गाने बहुत चले।

1969 में 'आराधना' एस. डी. बर्मन के संगीत के कारण हिट रही। इसका प्रसिद्ध गाना था ''मरे सपनों की रानी कब आयेगी तू''। इस दशक के अन्त में प्रदर्शित हुई 'खिलौना' का गीत ''खिलौना जानकर तुम तो मेरा दिल'' और 'दस्तक' (1970) की गज़ल भी हिट हुई। 'दस्तक' में संगीत मदन मोहन ने दिया था। विजय आनन्द द्वारा निर्देशित 'जानी मेरा नाम' में लता के गाये ''बाबुल प्यारे'' ने लोगों को भावुक कर दिया। इसके अतिरिक्त भी अन्य अनेक ऐसे गीत इस स्वर्णिम युग में बने जिन्हें आज भी सुनकर एक असीम आनन्द की अनुभूति होती है।

संदर्भ सूची

डॉ. इन्दु शर्मा 'सौरभ' : भारतीय फिल्म–संगीत में ताल समन्वय, कनिश्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2007

फिल्म संगीत इतिहास अंक, संगीत कार्यालय हाथरस, जनवरी–फरवरी, 1998

लावण्य कीर्ती सिंह : हिन्दी चलचित्र जगत के सफलत्तम संगीत निर्देशक द्वय – लक्ष्मीकांत–प्यारेलाल, कनिश्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2008